कार्यक्रम का नाम– सामाजिक विज्ञान जिला अकादमिक संदर्भ समूह निर्माण एवं राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण पश्चात गतिविधि, हस्तक्षेप सम्बन्धी अभिमुखीकरण कार्यशाला।

कार्यक्रम समन्वयक– रवि कुमार जोशी, प्रवक्ता।

लक्ष्य समूह– जनपद बागेश्वर के माध्यमिक कक्षाओं में सामाजिक विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षक एवं शिक्षिकाएं।

उद्देश्य– सामाजिक विज्ञान जिला अकादमिक संदर्भ समूह का निर्माण करना एवं राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण पश्चात गतिविधि, हस्तक्षेप सम्बन्धी अभिमुखीकरण कार्यशाला के माध्यम से सामाजिक विज्ञान के उन बिंदुओं को जिनका कि राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण में न्यूनतम अंक प्राप्त हुए हैं ऐस कठिन संबोधों को गतिविधि एवं प्रयोगात्मक तरीके से पढ़ाने में शिक्षकों को समृद्व बनाना तथा शिक्षकों के माध्यम से विद्यार्थियों को उनके भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण से परिचित करना एवं उनमें प्रजातांत्रिक गुणों का विकास कर उनमें राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय समझ का विकास कर वर्तमान और भविष्य में आने वाले सामाजिक मुद्दों एवं चुनौतियों को नैतिकता और संवेदनशीलता के साथ हल करने के लिए प्रशिक्षित करना प्रशिक्षण का उद्देश्य रहा। ।

कार्यक्रम की अवधि– 13 एवं 14 सितम्बर 2023

कार्यक्रम में प्रतिभागी शिक्षक– 40 शिक्षक (प्रारम्भिक स्तर से उच्चतर माध्यमिक स्तर के)

परिणाम– 1–मानचित्र की समझ, इसके शिक्षण संबंधी चुनौतियों एवं मानचित्रों के बारे में हमारी मान्यताओं पर चर्चा करते हुए इसके महत्व और उपयोगिता को समझा गया।

2– ढूंढो तो जाने, नामक गतिविधि की गई जिसका उद्देश्य मानचित्र के विविध घटकों जैसे स्थान, सीमा, दिशा, पैमाना एवं संकेत आदि पर समझ बनाते हुए कैसे इनका उपयोग मानचित्र पठन की प्रक्रिया में कैसे किया जाय? इन घटकों पर बने सवाल कैसे हमें मानचित्रों से जोड़ते हैं, यह बात चर्चा में आ सकी।

3– दिशाओं को थोड़ा गहराई से समझा गया, जानने की कोशिश रही कि कैसे हम अपने घर गांव में दिशाओं का निर्धारण करते हैं। दिशाओं में रिलेटिविटी यानी कि सापेक्षता के महत्व को समझा गया और पृथ्वी के संदर्भ में दिशाओ (पूर्व, पश्चिम, उत्तर दक्षिण) के निर्धारण की प्रक्रिया को सूर्य एवं ध्रुव तारे के आधार पर समझा गया।

3– ''मैप ओरिएंटेशन'' की गतिविधि के माध्यम से यह समझने का प्रयास रहा कि कैसे यह मानचित्र हमें किसी स्थान विशेष की दिशाओं को बताते है इसके लिए उत्तराखंड के मानचित्र की मदद से बागेश्वर से विभिन्न स्थानों जैसे लोहाघाट, मसूरी, रुद्रप्रयाग, गौमुख, नैनीताल, पिथौरागढ़ और गंगोत्री आदि स्थानों की दिशा निकाली गई जिन्हें उनकी दिशाओं के अनुरूप प्रशिक्षण कक्ष की दीवारों पर भी दर्शाया गया।

4– स्थान निर्धारण में दूरी भी बहुत महत्वपूर्ण घटक है जिसे समझने हेतु ''मानचित्र में पैमाने'' नामक गतिविधि के माध्यम से अलग अलग स्थानों के बीच की स्थलीय एवं हवाई दूरी को धागे एवं स्केल की मदद से निकलते हुए मानचित्र में दिए पैमानों की मदद से धरातलीय एवं कागज की दूरी में अंतर्संबंधों को समझा गया, साथ ही मानचित्र में दिए विविध पैमानों जैसे कथनात्मक पैमाना, रेखीय पैमाना एवं प्रदर्शक भिन्न आदि को भी समझा गया।

अभिमुखीकरण कार्यशाला पश्चात शिक्षकों द्वारा अपने विद्यालयों में जाकर प्रयोगात्मक एवं गत्यात्मक रूप में सामाजिक विज्ञान विषय को पढ़ाने के प्रयास किये गए जिसमें छात्र–छात्राओं द्वारा रूचि दिखाई गयी और विषय के प्रति उत्साह दिखाई दिया।

कार्यशाला की कुछ झलकियां चित्रों के माध्यम से–